मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2021-23 /R.N.I. No. 2022007062

'पीने को पानी नहीं, मंत्री जी जवाब दो' 2
नूंह में हुए तांडव का जवाब दें मुख्यमंत्री 4
मोदी-योगी की विचारधारा पैदा कर रही है चेतन सिंह जैसे हत्यारे 5
नूंह को मणिपुर-गुजरात बनाने की भाजपा की साजिश नाकाम 6
नगर निगम में पौधारोपण के नाम पर लूट कमाई की तैयारी 8

वर्ष 37 | अंक -38 | फरीदाबाद | 6 अगस्त-12 अगस्त 2023 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

दंगों में जितना भी खून बहे, चुनावी फसल नहीं लहलहाएगी

मुख्यमंत्री खट्टर : दंगाई भी अपने पुलिस भी अपनी

गृहमंत्री विज : हिन्दुत्व के लिए दंगाई जरूरी

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

केंद्र की मोदी सरकार हो या फिर हरियाणा की खट्टर सरकार दोनों ने मिलकर जनता को न केवल बेवकूफ बनाया है बल्कि जमकर लूटा भी है, टैक्सों व तरह-तरह के शुल्कों का बोझ ओर महंगाई-बेरोजगारी बढ़ाने के अलावा जनता को बीते नौ साल में ये कुछ न दे पाए।

इन हालात में भाजपाई शासकों को साफ नजर आ रहा है कि आगामी चुनावों में इनका सफाया होने वाला है। चुनाव जीतने का एकमात्र रास्ता इन्हें केवल हिंदू वोटों का ध्रुवीकरण नजर आता है। इसी की उम्मीद में ये लोग 80 बनाम 20 की बात करते आ रहे हैं लेकिन धरातल पर ये चरितार्थ होता कहीं नजर नहीं आ रहा। इसलिए अस्सी-बीस के फार्मूले के चरितार्थ करने के लिए हिंदू मुस्लिम दंगा कराना भाजपाई शासकों के लिए अति आवश्यक है। 2019 में भी भाजपाई शासक वर्ग की हालत निहायत ही पतली थी, जीतने के आसार बहुत धुंधले नजर आ रहे थे। ऐसे में भाजपाइयों ने पुलवामा में 40 जवानों को बलि चढ़ाकर अपनी जीत का हथियार बनाया था, आज भी लोग बात करते हुए कहते हैं कि अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए अब भी न जाने कौन सा खेल खेल देगी ये पार्टी। कोई पाकिस्तान से जंग छेड़ने की बात कहता है तो कोई इसी तरह का अन्य धमाका करने की बात कहता है। अब सामने आने लगा है कि पहले मणिपुर में गृहयुद्ध छिड़वा कर संघियों ने एक नया प्रयोग कर डाला, उस प्रयोग को देखते हुए लगने लगा था कि ऐसे ही अन्य प्रयोग भी जल्द ही किए जाएंगे, सो वह अगला प्रयोग नूंह में कर दिखाया।

साढ़े ग्यारह लाख की आबादी वाले मेवात में करीब साढ़े तीन लाख हिंदू भी बसते हैं। 1947 से लेकर आज तक वहां कभी हिंदू मुस्लिम का फसाद नहीं हुआ था। वहां के तमाम गांवों में हिंदू मस्लिम भाईचारा बहुत ही मजबूत रहा है। मेवातियों का इस्लाम थोड़ा भिन्न है। मुसलमान होते हुए भी ये हिंदू परंपराओं का निवर्हन करते आ रहे हैं। मेवात में एक कहावत बड़ी मशहूर है कि 'मेव का क्या मुसलमान और जाट का क्या हिंदू' इसका मतलब ये है ये दोनों समुदाय कट्टरपंथी न होकर बहुत ही लिबरल किस्म के हैं। मौजूदा दंगे में भी मेवात के किसी भी गांव में हिंदू मस्लिम आपस में नहीं भिड़े जबकि संघी दंगाइयों का ये अनुमान था कि वे इस भाईचारे को तोड़ पाएंगे।

ये दंगा कोई आकस्मिक नहीं हो गया, पूरी योजना व तैयारी के साथ सरकारी संरक्षण में कराया गया था। फरीदाबाद क्षेत्र में बिटटू बजरंगी बीते एक डेढ़ साल में दंगे भड़काने के अनेकों विफल प्रयास कर चुका था, ने इस बार मोनू मानेसर से मिलकर 'बड़ा काम' करने की योजना बनाई थी। मोनू मानेसर व बिट्टू दोनों ही गोरक्षक एवं बजरंग दल के नाम पर गुंडागर्दी करते आए हैं। यह रहस्य किसी से छिपा नहीं है कि इनकी गुंडागर्दी केवल पुलिस के संरक्षण में ही चलती आ रही है। जाहिर है ये संरक्षण भाजपा सरकार के इशारे पर दिया जा रहा था क्योंकि दंगा कराकर ध्रुवीकरण के लिए ऐसे तत्व उपयोगी रहते हैं। कहने को तो यह जलाभिषेक यात्रा थी लेकिन सवाल उठता है इस यात्रा में भिवानी, हिसार, जींद, कैथल, पानीपत, करनाल तक से लोगों को गाड़ियों में भरकर किसलिए लाया गया था? फिर इन गाड़ियों में तलवारें, बंदूकें व अन्य हथियारों के अलावा पत्थर क्यों भरे गए थे? जाहिर है धार्मिक यात्रा की आड़ में यह उन मेवातियों पर एक तरह का अंतिम प्रहार था जो अब तक अन्य अनेकों छोटे-मोटे उकसावों एवं भड़कावों को नजर अंदाज करते रहे थे। कहने को आज नेतागण कह सकते हैं कि पुलिस की लापरवाही थी लेकिन यह बिलकुल गलत बात है। पुलिस की कोई लापरवाही नहीं थी, पुलिस ने वही किया जैसा उसको आदेश था। हां, यहां के पुलिस अफसरों में दंगा रोकने के लिए उतना दम नहीं था जितना कि बरेली के एसएसपी प्रभाकर चौधरी में था। उन्होंने योगी के आदेश को धता बताते हुए कांवड़ियों की दंगा करने की हसरत को सख्ती से कुचल दिया था, जिसके परिणाम स्वरूप चंद घंटों में ही उनका तबादला पीएसी में कर दिया गया। यहां तैनात कोई भी अफसर अपनी मलाईदार पोस्ट गंवाने का जोखिम उठाने को तैयार नहीं था।

इस दंगे से पहले कई बार बिट्टू बजरंगी फरीदाबाद क्षेत्र में अनेकों ऐसी कार्रवाइयां करता रहा है जिससे कि हिंदू मस्लिम फसाद खड़ा हो सकता था लेकिन मुसलमानों ने बहुत ही सब्र व समझदारी से काम लिया। बीते दिनों इसी बिट्टू ने थाना कोतवाली के सामने बनी मजार पर हनुमान चालीसा पढ़ने की तैयारी की थी। इलाके का कोई भी मुसलमान इससे भिड़ने को नहीं आया, इसके बावजूद पुलिस का भारी प्रबंध बिट्टू की सुरक्षा के लिए तैनात था। हां, एक समाजसेवी दीनदयाल गौतम ने पहल करते हुए थाना कोतवाली में आकर उसके विरुद्ध कार्रवाई की मांग की थी जिस पर बिट्टू के खिलाफ एफआईआर तो दर्ज कर ली गई लेकिन कार्रवाई कोई नहीं की गई।

इसी तरह करीब एक माह पूर्व धौज के इलाके में भी इसी बिट्टू गुंडे ने एक गरीब जमात अली के दुधारू पशु लूट लिए थे और आसपास के मुस्लिम गांवों में वह अपने गुंडों के साथ तलवारें घुमाता हुआ थाना धौज तक ले आया था। थाने में जमकर अभद्रता करने के बावजूद पुलिस ने बिट्टू का कोई इलाज नहीं किया, ये सब बातें सिद्ध करती हैं खट्टर सरकार इस गुंडे पर कितनी मेहरबान रही है। इसी मेहरबानी की खाद व पानी पाकर इस बिट्टू गुंडे ने इस दंगे को अंजाम देने में भागेदारी की।

फरीदाबाद के पुलिस आयुक्त विकास अरोड़ा जो अब फ्लैग मार्च करके अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते घूम रहे हैं, उस वक्त उनकी वह शक्ति कहां चली गई थी जब बिट्टू अपने गिरोह के साथ गुंडागर्दी करने में जुटा था? जब बिट्टू फरीदाबाद से अपने गिरोह के जत्थों को लेकर धौज होते हुए मेवात की तरफ बढ़ रहा था? इस दौरान वह फेसबुक पर अपने वीडियो भी वायरल कर रहा था जिसमें वह मेवातियों को ललकार रहा था।। इस बिट्टू को समय रहते हवालात में बंद करके नूंह के दंगे को रोका भी जा सकता था।

शातिरों द्वारा धर्म के नाम पर बहका कर जोड़े गए थे नासमझ लोग

अभिषेक : दंगे में नाहक गई जान

दंगे में जान गंवाने वाले लोगों में से एक था पानीपत का 22 वर्षीय अभिषेक, पेशे से इस मैकेनिक के पिता दिहाड़ीदार मज़दूर हैं इसे मात्र छह महीने पूर्व ही हिंदू धर्म को खतरे में बता कर बजरंगी गुंडों ने अपने गिरोह में शामिल कर लिया था। इस गरीब को नहीं पता था जिस हिंदू धर्म को मुगलों और अंग्रेजों के राज में कोई खतरा नहीं हुआ था बीते नौ साल में कहां से खतरा पैदा हो गया? लिहाजा वह इनके बहकावे में आकर मेवात दंगे में शामिल हुआ और अपनी जान से हाथ धो बैठा। इसी तरह के अनेकों नौसिखिए लड़कों को विभिन्न जिलों से गाड़ियों में लाद-लाद कर लाया गया था, उन बेचारों को इस बात का जरा भी आभास नहीं था कि उनके साथ क्या होने वाला है? बहादुरी का दम भरने वाले और भड़काऊ नारे लगाने वाले शातिर नेता तो तुरंत मौके से नौ दो ग्यारह हो गए जबकि नौसिखिए लड़के संकट में फंस गए।

मेवातियों को चैलेंज देकर व उनके दामाद बन कर आने वाले इन बजरंगियों को जब मेवाती गिरोह ने घेर लिया तो ये बजरंगी लगे पुलिस-पुलिस चिल्लाने, कभी खट्टर सरकार से तो कभी मोदी सरकार से गुहार लगाने लगे कि उनकी जान बचाई जाए, उनकी सुरक्षा के लिए अतिरिक्त सुरक्षा बल भेजे जाएं, हेलीकॉप्टरों से उन्हें वहां से निकाला जाए। समझ में नहीं आता जो बजरंगी चैलेंज देकर मेवात की चढ़ाई करने आए थे उनकी बहादुरी यकायक कहां गुम हो गई? क्या उनकी सारी बहादुरी सरकार के दम पर ही होती है?